पूर्ण हुआ पंच शतक का संघर्ष
(युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत)

डॉ० ज्योति सिंह
सहायक आचार्य
तुलनात्मक साहित्य विभाग
वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सूरत
सं० सूत्र - 7206536258
Email:- jyotisinghnik195@gmail.com

प्रस्तावना –

माँ योगी आया
योगी आया
तेरे द्वारे राम नाम
की झोली लाया
माँ योगी आया
योगी आया।।

माँ योगी आया
योगी आया
सनातनी संस्कृति
की लौ जगाने
अयोद्धया पुरी
तेरे द्वारे लाया
माँ योगी आया
योगी आया।।

माँ योगी आया
योगी आया
पंच शतक तक
धीरज धर
भगवा ध्वज
लहराने आया
योगी आया
माँ योगी आया।।

माँ योगी आया
योगी आया
तन मन धन
समर्पित करके
जन मन राम
रमाने आया
माँ योगी आया
योगी आया।।

भव्य मंदिर
बनवा कर
विश्व - गुरु राह
दिखाने आया
माँ योगी आया
योगी आया।।
माँ तेरे द्वारे
राम नाम की

झोली लाया
माँ योगी आया
योगी आया।।

उल्लेखित भाव मेरे मन में उस समय आया था जब हम सभी स्वयं सेवक श्रीराम के भव्य मन्दिर का निर्माण करने हेतु राम भक्तों के द्वारे - द्वारे गए थे। इस अभियान में राम नाम रुपी झोली लेकर निधि लेना तो एक बहाना था, मुख्य उद्देश्य तो युवाओं को श्रीराम की ऐतिहासिक संस्कृति से जोड़ना था। इस ऐतिहासिक व सांस्कृतिक आन्दोलन से अपने वर्तमान समाज को एक सूत्रता के बन्धन में बांधकर संविधान के बन्धुत्व भाव से युक्त सशक्त समाज बनाना दूसरा उद्देश्य था और यह काम एक दिन का नहीं है, इसके लिए सन् १५२८
से संघर्ष चल रहा है। संघर्षरत् बन्धुओं को इस बात का ज्ञान था कि जिसके लिए आन्दोलन कर रहे हैं वह उनके जीवन काल में सफल नहीं होने वाला है, फिर भी उन्होंने स्वप्न देखा।
आज अर्थात् २२ जनवरी २०२४ को जब पंच शतक का स्वप्न पूर्ण हुआ तब मन हमारे पूर्वजों के द्वारा दिए गए बलिदानों को पुनः स्मरण कर रहा है। सुखद अनुभूति यह है कि आज के बच्चे-बच्चे के कंठों से भी श्रीराम जन्म स्थान के पाँच सौ वर्षों के संघर्षों का इतिहास सुना जा सकता है ; यह हम सबके लिए गर्व की बात है।
परन्तु अभी एक बात विचारणीय है कि क्या रग - रग में बसने वाले भगवान श्रीराम के लिए हम मनुष्य भवन या मन्दिर का निर्माण करके देंगे तो वे वहाँ पर निवास करेंगे ?
तो इसका उत्तर होगा कि हमारे भव्य मन्दिर की आवश्यकता हमारी है, न कि राम जी की। सर्वविदित है कि राम से बड़ा राम का नाम होता है। कलयुग में नाम की महिमा है। जिस प्रकार हारिल पक्षी तिनका के सहारे ही अपनी पूरी उड़ान भर लेता है, ठीक उसी प्रकार की मनुष्य की प्रवृत्ति भी है, राम नाम के सहारे इस भव सागर को पार कर लेता है। इसलिए कहा जा सकता है कि यह मन्दिर तो सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है ; ऐतिहासिक धरोहर है। इस विषय पर प्रकाश डालना ही आलेख का उद्देश्य है।

युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत राम रचित साहित्य -

श्रीराम भगवान विष्णु के मात्र अवतार ही नहीं है , अपितु ये तो मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हैं, जिन्होंने अखण्ड भारतवर्ष को सांस्कृतिक एकता रुपी सूत्रों में पिरोया था।
अतः प्रत्येक युग में श्रीराम केन्द्रित अनगिनत साहित्य वह चाहे मैथिलिशरण गुप्त का साकेत, कैकेई अनुताप, उर्मिला, पंचवटी हो या फिर सुर्यकान्त त्रिपाठी निराला की लम्बी कविता राम की शक्ति पूजा, पंचवटी हो या फिर श्रीनरेश मेहता की संशय की एक रात, शबरी हो या फिर नरेन्द्र कोहली की रचना अभ्युदय, रामकथा हो या फिर मृदुला सिन्हा का उपन्यास मंदोदरी हो लिखा जाता रहा है। चूँकि साहित्य समाज को दिशा देने का कार्य भी करता है, इसलिए हमारे वर्तमान समाज को राम भक्ति करने के साथ उनकी प्रासंगिकता को भी समझाने की चेष्टा की गई है। इसके साथ ही आज के युवाओं को यदि वर्तमान समय को समझना है तो उन्हें अपनी परम्पराओं को पकड़कर रखना होगा। अत्याधुनिकता की अंधी दौड़ में सभी लोग लगे हुए हैं। किसी को रुक कर पीछे देखने का अवकाश नहीं है। कुटुम्ब व्यवस्था अधिकांशतः क्षीण हो चुकी है और कहीं है भी तो सभी सदस्य स्वछन्द रुप में हैं , समाज अर्थ - केन्द्रित मानसिकता से ग्रस्ति हो चुका है।
सर्वमान्य है कि जो अपने इतिहास से नहीं सीखता वह एक दिन स्वयं इतिहास बन जाता है। अतः उन्हें अर्थात् सामाजिकों को एक दृष्टि त्रेता व द्वापर युग पर भी डालनी होगी। महाभारत में कपटी मामा शकुनी, मोहान्ध राजा धृतराष्ट्र , वचनाबद्ध व विवश भीष्म पितामह के कारण दुर्योधन और पाण्डव के बीच सत्ता के लिए जो धर्म व अधर्म का युद्ध हुआ उससे भी सीख लेने की आवश्यकता है और लोक जीवन की दृष्टि से मंथरा और कैकेई के कारण नवनिर्वाचित राजा राम को वनवास जाना पड़ा जिसके केन्द्र में भी पड़ा सत्ता की लड़ाई थी। लेकिन इससे यह सीखना है कि कैसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने स्थिति को सम्भाल लिया और एक आदर्श रामराज्य की स्थापना किया।

आदर्श व्यक्तित्व निर्माण हेतु -

राज्याभिषेक से पूर्व श्रीराम चौदह वर्षों के लिए जन सम्पर्क और शासन को समाज के अन्तिम पायदान पर बैठे व्यक्ति से जोड़ने के अभियान में निकल पड़े। जैसा देश वैसा ही भेष। इस अभियान में उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए ; उदाहरण स्वरुप - वनवासी भेष में वनवासियों के सन्निकट जाकर उनके द्वारा राष्ट्र हित में किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण करना था ; इस क्रम में ऋषि , महर्षि ,ब्रह्मऋषि इत्यादि जो न सिर्फ समाज के मुख्यधारा से अपने को अलग करके, एकांतवास करके राष्ट्र हित में अनुसंधान कर रहे थे उनका सानिध्य लाभ लेकर न सिर्फ अत्याधुनिक अस्त्र - शस्त्रों का ज्ञान लिए ; अपितु उनके समक्ष आने वाली तत्कालीन चुनौतियों को स्वीकार कर समस्याओं का निराकरण भी किये ; यही नहीं जनजातीय समाज के मुखिया अर्थात् राजा गुह , निषादराज केवट , गुरुकुल प्रमुख भीलनी शबरी माता, वानर राज सुग्रीव, रामभक्त हनुमान, बालि युवराज अंगद , राक्षस राज विभीषण , पक्षी राज काकभूशुण्डू, गिद्धराज जटायू इत्यादि के सन्निकट आए और यह सिद्ध करके दिखाएँ कि रावण जैसे दुवृत्ति से यदि हमें निपटना है तो समाज को संगठित होना ही होगा। गिलहरी प्रयास तो सबको करना ही पड़ेगा।

जागरूक समाज की क्रान्ति की मशाल --

प्रत्येक युग में वह चाहे भक्ति - आन्दोलन हो या फिर स्वतंत्रता संग्राम के लिए किया गया संन्यासी आन्दोलन हो सभी के केन्द्र में समाज स्थित था। यही कारण है कि पाँच सौ वर्षों से सांस्कृतिक आन्दोलन के केन्द्र में राम भक्त ही थे और आज भी श्रीराम के भव्य मंदिर निर्माण के शिलान्यास में दो लाख पचहत्तर हजार गाँवों से राम नाम अंकित ईंटों से नींव डाली गई।

यह राम नाम वही मणि रुपी दीप है जिसे गोस्वामी तुलसीदास ने अपने तत्कालीक समाज को एक मंत्र के रुप में दिया था " राम नाम मणि दीप धरु जीह देहरी द्वार। तुलसी भीतर बाहिरो ज्यों चाहसि उजियार॥ "

गोस्वामी तुलसीदास एक ऐसे संत कवि थे जो तत्कालीक चुनौतियों को स्वीकार करते हुए न सिर्फ अपने समकालीन समाज को अपितु आने वाली पीढ़ियों को अपनी रचनाओं के माध्यम से सतर्क किए थे। श्रीराम के जीवन चरित्र को रामचरित मानस में , सीता माता के चारित्रिक विशेषताओं को जानकी मंगल में , विनय पत्रिका में भक्त हनुमान की एकनिष्ठता के भाव को दिखाते हुए श्रीराम दरबार की महत्ता स्थापित किये थे। इसके साथ राजनीतिक व सामाजिक परिस्थितियों का सजीव चित्रण डंके की चोट पर उन्होंने कवितावली में किया। इनकी रचनाओं ने न सिर्फ सामाजिकों के समक्ष आदर्श रखा , अपितु रामलला को अपने जन्म स्थान अयोध्या पर अधिकार प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका भी निभायी।

तुलसी दोहा शतक की कुछ महत्त्वपूर्ण पंक्तियों को उदाहरण के रुप में देखा जा सकता है

" राम जन्म मंदिर लसत अवध के बीच, तुलसी रचित मसीत तहाँ खल मीर बाँकी मीच "

पिछले पाँच सौ साल से विधर्मियों के साथ सशक्त संघर्ष चलता रहा। इतिहास के गर्भ में अनगित श्रीराम भक्तों को समाधि ग्रस्त कर दिया गया।

" महाराज मरे नहीं हैं। मेरा सुहाग रामजी की बलिवेदी पर चढ़ कर अमर हो गया है। उनका अधूरा कार्य पूरा करना यही मेरे जीवन का उद्देश्य है। अब रामजन्म भूमि का सम्मान ही मेरा सपना है। " ('कार सेवा में महिलाओं का योगदान '

सेविका प्रकाशन पृ० सं०- ३)

आलोच्य कथन श्रीराम जन्मभूमि संघर्ष की अमर वीरांगना जया कुमारी का है और उस समय का कथन है जब उनके पति विधर्मियों के साथ संघर्ष करते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।

सन् 1528 में श्रीराम के जन्म स्थान पर बने मंदिर को तोड़ना और उसके ऊपर मस्जिदनुमा गुम्बद बना देना सिर्फ पंथ विशेष के लिए ही नहीं था,अपितु सनातनी संस्कृति को अपदस्य करने का कुत्सित प्रयास था। इस कुकर्म को रोकने के लिए पाँच सौ वर्षों से आमने - सामने का युद्ध होता रहा। अनगिनत युवाओं ने अपने प्राणों

की आहुति दे दी ; उनमें से एक कोठारी बन्धु भी थे। राम कोठारी और शरद कोठारी कार सेवा करने अयोध्या गए और आवश्यकतानुसार आन्दोलन को गरिमापूर्ण व परिणामकारी बनाए रखने के लिए इन दोनों बन्धुओं ने किसी सरकार की धमकियों की चिन्ता भी नहीं किए और अन्त में शहीद हो गए। ऐसे ही अनगित नवजवान बन्धु व भगिनियों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। तब जाकर आज के मंदिर के इस भव्य स्वरुप का दर्शन हमारी पीढ़ियों को मिल रहा है।

वन्दे मातरम्

अस्तु।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 दास गोस्वामी तुलसी , रामचरित मानस गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।

2 दास गोस्वामी तुलसी , हनुमान चालीसा।

3.दास गोस्वामी तुलसी , सुन्दरकाण्ड गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।

4 इतिहास के पन्नों में , लोक सभा टी. वी. (संसद टी .वी.)